

**[2023] 10 एस. सी. आर 1010:2023 आई. एन. एस. सी. 604**

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 10 एस सी आर।

ए.

एस. नरहरी और ओ. आर. एस.

बनाम

एस. आर. कुमार और ओआरएस।

(2023 की सिविल अपील सं. 4289-4290)

बी.

05 जुलाई, 2023

**[कृष्णा मुरारी और संजय करोल, जे. जे.]**

सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908-या। XLVII r.7 - भारत का संविधान-अनुच्छेद 141-क्या उच्चतम न्यायालय द्वारा समीक्षा में उच्च न्यायालय से संपर्क करने की स्वतंत्रता दी गई है, क्या यह स्वतः उक्त मामले को वृद्धि मैट्रिक्स में रखता है, और विशेष अनुमति याचिका का उपचार फिर से उपलब्ध कराता है-आयोजित:उच्चतम न्यायालय की एक बड़ी पीठ द्वारा इस पर निर्णय लेना और विचार-विमर्श करना आवश्यक है।

सी.

मामले को बड़ी पीठ को संदर्भित करते हुए, न्यायालय ने

डी.

यह अभिनिर्धारित किया कि **-1.** यदि गैर-बोलने वाले आदेश के माध्यम से विशेष अनुमति याचिका को खारिज करने को भारत के संविधान के अनुच्छेद **141** के तहत कानून नहीं माना जाता है, तो इसे भी न्यायिक प्रक्रिया के खिलाफ नहीं माना जा सकता है, और इसलिए, ऐसी प्रत्येक बर्खास्तगी में, उन मामलों में भी जहां बर्खास्तगी वापस लेने के रूप में है, एक नई विशेष अनुमति याचिका दायर करने का उपाय अभी भी बना रहेगा। इसके अलावा, यदि उक्त तर्क पर, उच्च न्यायालय में समीक्षा दायर करने के लिए एक उपाय की अनुमति है, तो वही तर्क मनमाने ढंग से बाद में विशेष अनुमति याचिका दायर करने को बाहर नहीं कर सकता है। [पैरा

**39] [1019-एफ-जी]**

ई.

एफ.

**2.** यह न्यायालय इस तथ्य से अवगत है कि इस तरह की व्याख्या, यदि उच्च न्यायालय में समीक्षा दायर करने के विशिष्ट दायरे से परे विस्तार की अनुमति दी जाती है, तो यह मुकदमेबाजी के द्वार खोल देगा, और अनिवार्य रूप से इसका मतलब यह होगा कि विशेष अनुमति याचिका की प्रत्येक बर्खास्तगी को घोषित करने के कारणों के साथ होना चाहिए।[पैरा **40**] [1020-ए-बी]

जी.

**3.** इसलिए, इस तरह के मुद्दे को शांत करने के लिए, इस न्यायालय की एक बड़ी पीठ द्वारा इस पर निर्णय लेना और विचार-विमर्श करना आवश्यक है।[पैरा **41**] [1020-सी]

एच.

1010 ए.

1011

एस. नरहरी और ओआरएस बनाम एस. आर. कुमार और ओआरएस।

संध्या एजुकेशनल सोसाइटी बनाम भारत संघ **(2014) 7 एस. सी. सी. 701**; विनोद कपूर बनाम गोवा राज्य **(2012) 7 एस. सी. सी. 701**; खोडे डिस्टिलरीज लिमिटेड बनाम श्री महादेश्वर सहकार सकारे कारखाने लिमिटेड **(2019) 4 एस. सी. सी. 376**: [2019] 3 एस. सी. आर. **411**; कुन्हयमद बनाम केरल राज्य

**(2000) 6 एससीसी 359**: [2000] 1 पूरक।एस. सी. आर. **538**-संदर्भित।

बी.

संदर्भित निर्णय

**(2014) 7 एस. सी. सी. 701**

संदर्भित किया गया है

पैरा **27**

**(2012) 7 एस. सी. सी. 701**

संदर्भित किया गया है

पैरा **30**

सी.

## **[2019] 3 एससीआर 411**

संदर्भित किया गया है

पैरा **34**

## **[2000] 1 पूरक।पैरा 36 में निर्दिष्ट एस. सी. आर. 538**

सिविल अपीलीय न्यायनिर्णय:2022 की सिविल अपील (डायरी) संख्या 23775।

बेंगलुरु में कर्नाटक उच्च न्यायालय के 2022 के आर. पी. संख्या 365 में दिनांकित 15.07.2022 और 2012 के आर. एफ. ए. संख्या 392 में दिनांकित 20.12.2019 निर्णय और आदेश से।

डी.

देवदत्त कामत, वरिष्ठ अधिवक्ता, साकेत गोगिया, जावेदकर, धवेश पहुजा, सुश्री गौरी पांडे, मान सिंह, सुश्री अवंतिका मनोहर, अधिवक्तागण अपीलार्थियों के लिए।

ई.

निशांत रमाकांतराव कटनेश्वरकर, सुश्री सुवर्णा गानू, संकेत एस देशपांडे, अधिवक्तागण उत्तरदाताओं के लिए।

न्यायालय का निर्णय इसके द्वारा दिया गया था

कृष्णा मुरारी, जे।

देरी को माफ कर दिया गया।

एफ.

2. छुट्टी दे दी गई।

3. वर्तमान अपीलों को 2012 (डी. ई. सी.) के आर. एफ. ए. संख्या 392 में विवादित आदेश और दिनांक 20.12.2019 के फैसले और बेंगलुरु में कर्नाटक उच्च न्यायालय द्वारा पारित 2022 की समीक्षा याचिका संख्या 365 में विवादित निर्णय और आदेश के खिलाफ निर्देशित किया गया है, (जिसे इसके बाद "उच्च न्यायालय" के रूप में संदर्भित किया गया है), जिसके तहत अपीलार्थियों द्वारा यहां दी गई अपील और समीक्षा दोनों को खारिज कर दिया गया था। 4. सुविधा के लिए वर्तमान अपीलों के निर्णय के लिए आवश्यक प्रासंगिक तथ्यों का उल्लेख यहां किया जा रहा है।

जी.

एच.

[2023] 10 एस सी आर।

ए.

5. एक स्वर्गीय अरोसजी राव सूट संपत्ति के मूल मालिक थे और उनकी दो बेटियाँ थीं। उक्त स्वर्गीय अरोसजी राव ने अपनी मृत्यु से पहले, अपनी दोनों बेटियों को समान हिस्से में सूट संपत्ति की वसीयत करते हुए एक वसीयत का निष्पादन किया। उक्त वसीयत में, अन्य बातों के अलावा, यह कहा गया था कि दोनों उत्तराधिकारियों को अपने पूरे जीवनकाल के दौरान सूट संपत्ति का आनंद लेना था, और उसके बाद, इसे उनके संबंधित पुरुष उत्तराधिकारियों को हस्तांतरित किया जाना था। उक्त स्वर्गीय अरोसजी राव की बाद में 30.09.1945 पर मृत्यु हो गई, और उपर्युक्त वसीयत की जांच की गई।

बी.

6. मूल मालिक लेफ्टिनेंट अरोसजी राव की दो बेटियाँ, श्रीमती. कमला बाई और श्रीमती. अनुसूया बाई ने वसीयत की गई संपत्ति के संयुक्त मालिकों के रूप में 45 साल की अवधि के लिए एक मेसर्स रजत ट्रस्ट के पक्ष में पट्टा विलेख निष्पादित किया। उक्त पट्टे की अवधि के दौरान, 07.07.1988 पर, श्रीमती. कमला बाई का निधन हो गया और मूल सूट मालिक की वसीयत के अनुसार, सूट संपत्ति का एक हिस्सा श्रीमती के उत्तराधिकारियों को दिया जाना था। कमला बाई।

सी.

7. श्रीमती की मृत्यु के बाद। कमला बाई, उनके उत्तराधिकारियों और श्रीमती के बीच विवाद पैदा हो गया। अनुसूया बाई, जिनके कारण, श्रीमती। अनुसूया बाई ने विभाजन और वसीयत की गई संपत्ति के अपने हिस्से पर कब्जा करने के लिए मुकदमा दायर किया। हालाँकि इस मामले को दोनों पक्षों द्वारा सुलझा लिया गया था और एक समझौता आदेश पारित किया गया था। दोनों पक्षों ने मुकदमे की संपत्ति को समान शेयरों में विभाजित करने पर सहमति व्यक्त की।

डी.

ई.

8. समझौता आदेश के बाद, श्रीमती के पुत्र। अनुसूया बाई, जो प्रत्यर्थी संख्या 1 और प्रत्यर्थी संख्या 2 हैं, ने अपनी माँ और स्वर्गीय श्रीमती के बेटों के खिलाफ मुकदमा दायर किया। कमला बाई, अनिवार्य निषेधाज्ञा की मांग कर रही हैं।

9. उक्त सूट के दौरान, श्रीमती। अनुसूया बाई ने 51 वर्षों की अवधि के लिए अपीलार्थियों को मुकदमे की संपत्ति पट्टे पर दी। अपीलार्थियों ने तब मुकदमे की संपत्ति पर एक वाणिज्यिक परिसर

का निर्माण शुरू किया, हालाँकि, उत्तरदाताओं को, उक्त निर्माण के विपरीत, उनके पक्ष में स्थगन आदेश मिला।

एफ.

10. उपरोक्त वाद में, विचारण न्यायालय ने अन्य प्रासंगिक मुद्दों को तैयार करने के अलावा, पाँच अतिरिक्त मुद्दे भी तैयार किए जो निम्नानुसार हैं:- I. क्या वादी यह साबित करते हैं कि प्रतिवादी नहीं। 1 मुकदमे की संपत्ति में केवल आजीवन ब्याज है?

जी.

II. क्या वादी यह साबित करते हैं कि प्रतिवादी नहीं। 1 को अपने जीवनकाल के बाद मुकदमे की संपत्ति से निपटने का कोई अधिकार नहीं है?

एच.

1013

एस. नरहरी और ओआरएस बनाम एस. आर. कुमार और ओआरएस। [कृष्णा मुरारी, जे।] ए.

ए.

III. क्या वादी आगे यह साबित करता है कि प्रतिवादी सं. द्वारा वाद संपत्ति का कोई पट्टा, आदि। 1 क्योंकि उसके जीवनकाल से परे की अवधि शून्य है और उन पर बाध्यकारी नहीं है?

IV. चाहे प्रतिवादी नं। 7 यह साबित करता है कि उसने प्रतिवादी सं. 7 के साथ कानूनी रूप से बिक्री का समझौता किया है। 2 और 3 संपत्ति के अपने-अपने हिस्से के लिए?

बी.

V. क्या प्रतिवादी नं। 7 यह साबित करता है कि यदि यह मुकदमा पूरी अनुसूची संपत्ति के खिलाफ फैसला सुनाया जाता है तो न्याय की विफलता होगी?

11. आदेश और दिनांक 11.04.2002 के फैसले के माध्यम से, विद्वान विचारण न्यायालय ने उत्तरदाताओं द्वारा दायर मुकदमे को खारिज कर दिया, स्थगन आदेश को खाली कर दिया, और कहा कि पक्षों के बीच किया गया समझौता डिक्री उत्तरदाताओं पर बाध्यकारी है।

सी.

12. उसी से व्यथित होकर, प्रत्यर्थियों ने उच्च न्यायालय में अपील की। उक्त अपील के लंबित रहने के दौरान, श्रीमती. अंसुया बाई का निधन हो गया। इसके अलावा, प्रत्यर्थियों ने शिकायत में संशोधन के लिए सी. पी. सी. के आदेश VI नियम 17 के तहत एक आवेदन भी दायर किया और संपत्ति के कब्जे की वसूली में राहत की मांग की।

डी.

13. दिनांक 1 के आदेश और निर्णय के माध्यम से, उच्च न्यायालय ने प्रतिवादियों पर बाध्यकारी समझौता डिक्री के संबंध में विचारण न्यायालय के निष्कर्ष को बाधित नहीं किया, हालांकि, मुकदमे की संपत्ति के हिस्से के कब्जे की अतिरिक्त राहत के संबंध में, मामले को उचित निर्णय के लिए विचारण न्यायालय को भेज दिया गया था।

ई.

14. इससे व्यथित होकर, अपीलार्थी सं. 1 ने इस न्यायालय में विशेष अनुमति याचिका दायर की और उक्त विशेष अनुमति याचिका के लंबित रहने के दौरान, विचारण न्यायालय ने मामले को अपने अधिकार क्षेत्र में भेज दिया।

एफ.

15. आदेश और दिनांक 29.10.2011 के फैसले के माध्यम से, मुकदमे की संपत्ति के हिस्से के कब्जे के सीमित आधार पर विचारण न्यायालय ने प्रत्यर्थी नं.1 और प्रत्यर्थी नं.2 यहाँ।

16. विचारण न्यायालय के उपरोक्त निर्णय और डिक्री से व्यथित होकर, याची (गण) ने उच्च न्यायालय में एक और अपील दायर की। उच्च न्यायालय के समक्ष उक्त पहली अपील के लंबित रहने के दौरान, याचिकाकर्ता (ओं)/अपीलार्थी (ओं) द्वारा इस न्यायालय में दायर विशेष अनुमति याचिका को इस आधार पर खारिज कर दिया गया था कि विशेष अनुमति याचिका में मांगी गई राहत समाप्त हो गई थी।

जी.

एच.

1014

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 10 एस सी आर।

17. हालाँकि, उक्त विशेष अनुमति याचिका को खारिज करते हुए, इस न्यायालय ने कहा कि चूंकि दिनांक 1 के फैसले के खिलाफ दायर पहली अपील अभी भी उच्च न्यायालय के समक्ष लंबित थी और विशेष अनुमति याचिका में रिमांड आदेश के मुद्दे उठाए गए थे, इसलिए इस न्यायालय ने याची (गण) को रिमांड आदेश से प्रभावित हुए बिना लंबित अपील में उच्च न्यायालय के समक्ष ऐसे सभी प्रश्न उठाने की स्वतंत्रता दी। इसके बाद, उक्त पहली अपील को भी दिनांक 20.12.2019 के फैसले के माध्यम से खारिज कर दिया गया।

बी.

18. पहली अपील के खारिज होने से व्यथित अपीलार्थी (गण) ने इस न्यायालय के समक्ष एक और विशेष अनुमति याचिका दायर की, हालाँकि, इसे खारिज कर दिया गया क्योंकि समीक्षा

याचिका दायर करके उच्च न्यायालय का रुख करने की स्वतंत्रता के साथ इसे वापस ले लिया गया था।

सी.

19. स्पष्टता के लिए, ऐसे मामले में जहां कार्यवाही की एक बहुलता मौजूद है, हम यह स्पष्ट करना महत्वपूर्ण पाते हैं कि जहां तक वर्तमान अपीलों का संबंध है, चुनौती उच्च न्यायालय द्वारा पारित दो आदेशों 20.12.2019 और 15.07.2022 तक सीमित है।

डी.

20. पहली बार में, पहले की विशेष अनुमति याचिका के माध्यम से, उच्च न्यायालय के दिनांकित 20.12.2019 के मूल विवादित आदेश को चुनौती दी गई थी। इस न्यायालय ने इसे खारिज कर दिया था, हालांकि याचिकाकर्ता (ओं)/अपीलार्थी (ओं) को समीक्षा के माध्यम से उच्च न्यायालय का रुख करने की स्वतंत्रता दी गई थी।

ई.

21. उक्त स्वतंत्रता का उपयोग अपीलार्थी (गण) द्वारा किया गया था और उच्च न्यायालय में एक समीक्षा दायर की गई थी। हालांकि, इसे उच्च न्यायालय द्वारा विवादित आदेश और दिनांक 15.07.2022 के फैसले के माध्यम से खारिज कर दिया गया था। 22. वर्तमान अपीलों में, दोनों, अपील में उच्च न्यायालय द्वारा मूल विवादित आदेश के साथ-साथ उच्च न्यायालय द्वारा समीक्षा में आदेश को चुनौती दी जा रही है।

एफ.

विश्लेषण

23. दोनों पक्षों की ओर से उपस्थित एल. डी. वकील को बहुत विस्तार से सुना गया।

जी.

24. सबसे पहले, एल. डी. उत्तरदाताओं की ओर से पेश हुए वकील ने जहां तक वर्तमान अपीलों की स्थिरता का संबंध है, प्रारंभिक आपत्ति उठाई है।

25. हमारी यह सुविचारित राय है कि रखरखाव के मुद्दे पर निर्णय लेने के बाद ही यह न्यायालय ए के गुण-दोष में प्रवेश कर सकता है।

एच.

1015

एस. नरहरी और ओआरएस बनाम एस. आर. कुमार और ओआरएस। [कृष्णा मुरारी, जे।] ए.

मामला।विशेष अनुमति याचिका की रखरखाव का मुद्दा पारित होने के एक संस्कार के समान है, और यह माने जाने के बाद ही कि विशेष अनुमति याचिका बनाए रखने योग्य है, एक प्रविष्टि को विवाद के गुण-दोष में लिया जा सकता है।<sup>26</sup> उत्तरदाताओं का यह तर्क है कि जहां तक समीक्षा में पारित आदेश के खिलाफ विशेष अनुमति के माध्यम से अपील का संबंध है, आदेश XLVII नियम 7 के प्रावधान यह स्पष्ट करते हैं कि इसकी अनुमति नहीं है, अर्थात्, समीक्षा में पारित आदेश के खिलाफ विशेष अनुमति याचिका के माध्यम से कोई अपील विचारणीय नहीं है।

बी.

27. इसके अलावा, प्रत्यर्थियों द्वारा यह भी तर्क दिया गया है कि इस न्यायालय ने याची (गण) द्वारा दायर मूल विशेष अनुमति याचिका को खारिज करते हुए, याची (गण) को समीक्षा में उच्च न्यायालय का रुख करने की स्वतंत्रता प्रदान की, लेकिन याची (गण) को इस न्यायालय के समक्ष बाद में विशेष अनुमति याचिका दायर करने की विशिष्ट अनुमति नहीं दी। प्रत्यर्थी के अनुसार, स्पष्ट अनुमति की इस तरह की कमी, याचिकाकर्ताओं पर फिर से इस न्यायालय का दरवाजा खटखटाने के लिए रोक लगाती है। इसके लिए, प्रत्यर्थी ने

सी.

संध्या एजुकेशनल सोसाइटी बनाम भारत संघ के मामले पर भरोसा किया **1**

डी.

28. जहाँ तक प्रत्यर्थी के पहले विवाद का संबंध है, हम उसी से सहमत हैं। सी. पी. सी. के आदेश XLVII नियम 7 में यह स्पष्ट किया गया है कि समीक्षा में पारित आदेश के खिलाफ कोई विशेष अनुमति याचिका दायर नहीं की जा सकती है, और इस तरह, हमारे आगे विचार की आवश्यकता नहीं है। तैयार संदर्भ के लिए, इसे यहाँ पुनः प्रस्तुत किया जा रहा है:

ई.

“अस्वीकृति का आदेश अपील योग्य नहीं है। आवेदन देने के आदेश पर आपत्तियाँ।

(1) आवेदन को अस्वीकार करने वाला न्यायालय का आदेश अपील योग्य नहीं होगा; लेकिन आवेदन देने वाले आदेश पर आवेदन देने वाले आदेश की अपील या मुकदमे में अंततः पारित या किए गए डिक्ली या आदेश की अपील में तुरंत आपत्ति की जा सकती है।

एफ.

(2) जहां आवेदनकर्ता के उपस्थित होने में विफलता के परिणामस्वरूप आवेदन खारिज कर दिया गया है, वह अस्वीकार किए गए आवेदन को फाइल में बहाल करने के आदेश के लिए आवेदन कर सकता है, और जहां यह न्यायालय के संतोष के लिए साबित हो जाता है कि जब ऐसा आवेदन सुनवाई के लिए बुलाया गया था तो उसे किसी भी पर्याप्त कारण से उपस्थित होने

से रोका गया था, तो न्यायालय इसे ऐसी शर्तों पर फाइल में बहाल करने का आदेश देगा जो लागत के रूप में थीं।

जी.

1 (2014) 7 एस. सी. सी. 701

एच.

1016 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 10 एस. सी. आर.

या अन्यथा जैसा वह उचित समझे, और उसी की सुनवाई के लिए एक दिन निर्धारित करेगा।

**(3)** उप-नियम **(2)** के तहत कोई आदेश तब तक नहीं दिया जाएगा जब तक कि आवेदन की सूचना विरोधी पक्ष को नहीं दी गई हो।

29. हालाँकि, अपीलार्थियों ने इस तरह के प्रतिबंध को दूर करने के लिए, वर्तमान अपीलों में, न केवल उच्च न्यायालय द्वारा समीक्षा में पारित आदेश को चुनौती दी है, बल्कि अपील में उच्च न्यायालय द्वारा पारित मूल आदेश को भी चुनौती दी है। इसलिए, हमारे समक्ष विचार के लिए सीमित प्रश्न यह है कि क्या इस न्यायालय द्वारा समीक्षा में उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाने की स्वतंत्रता, स्वचालित रूप से उक्त मामले को वृद्धि मैट्रिक्स में रखता है, और विशेष अनुमति याचिका का उपाय फिर से उपलब्ध कराता है।

बी.

सी.

**30.** विनोद कपूर बनाम गोवा राज्य **2** के मामले में, याची

उसमें उच्च न्यायालय में एक रिट दायर की गई थी और उसे खारिज कर दिया गया था। इसके खिलाफ, याची ने उच्च न्यायालय में समीक्षा दायर की और सर्वोच्च न्यायालय में विशेष अनुमति याचिका भी दायर की। जब विशेष अनुमति याचिका की सुनवाई शुरू हुई, तो उसमें याची ने कहा कि उसने पहले ही एक समीक्षा दायर कर दी थी, और इसलिए, मामले को वापस लेने की स्वतंत्रता मांगी थी, और उन्हीं आधारों पर, विशेष अनुमति याचिका को वापस ले लिया गया था।

डी.

31. विशेष अनुमति याचिका को वापस लेने के बाद, उच्च न्यायालय द्वारा समीक्षा याचिका पर सुनवाई की गई, हालांकि, उसे खारिज कर दिया गया। समीक्षा की उक्त अस्वीकृति से व्यथित होकर, याची ने उच्चतम न्यायालय में एक और विशेष अनुमति याचिका दायर की।

ई.

32. वर्तमान मामले की तरह ही एक तथ्य परिस्थिति से निपटने के दौरान, जिसमें लगातार विशेष अनुमति याचिका दायर की गई थी और मूल विशेष अनुमति याचिका में आदेश ने केवल उच्च न्यायालय का रुख करने की स्पष्ट स्वतंत्रता दी थी, इस न्यायालय ने कहा कि बाद की विशेष अनुमति याचिका बनाए रखने योग्य नहीं थी। उक्त निर्णय के प्रासंगिक पैराग्राफ यहां प्रस्तुत किए जा रहे हैं:

एफ.

“अपीलार्थी द्वारा उद्धृत निर्णयों में यह दिखाने के लिए कुछ भी नहीं है कि इस न्यायालय ने अभिषेक मालवीय बनाम अतिरिक्त कल्याण आयुक्त और अन्य (उपर्युक्त) में अनुच्छेद 136 के तहत विशेष अनुमति के माध्यम से अपील की स्थिरता के संबंध में लिए गए दृष्टिकोण से अलग दृष्टिकोण लिया है।

जी.

2 (2012) 7 एससीसी 701 ए

एच.

1017

एस. नरहरी और ओआरएस बनाम एस. आर. कुमार और ओआरएस। [कृष्णा मुरारी, जे।] ए.

उसी आदेश के खिलाफ पहले की विशेष अनुमति याचिका के बाद उच्च न्यायालय के एक आदेश के खिलाफ संविधान को एक नई विशेष अनुमति याचिका दायर करने की किसी भी स्वतंत्रता के बिना वापस ले लिया गया था। इसी तरह, अपीलार्थी द्वारा उद्धृत निर्णयों में यह दिखाने के लिए कुछ भी नहीं है कि इस न्यायालय ने यह विचार लिया है कि उच्च न्यायालय के आदेश के खिलाफ समीक्षा के लिए एक आवेदन को अस्वीकार करते हुए, संविधान के अनुच्छेद 136 के तहत विशेष अनुमति के माध्यम से अपील बनाए रखने योग्य है।

बी.

परिणामस्वरूप, हम मानते हैं कि दीवानी अपीलें विचारणीय नहीं हैं और हम तदनुसार उन्हें खारिज करते हैं।”

33. इसके अलावा, संध्या एजुकेशन सोसाइटी (सुप्रा) के मामले में,

सी.

इस न्यायालय की दो-न्यायाधीशों की पीठ ने निर्धारित सिद्धांत को स्वीकार करते हुए विनोद कपूर जजमेंट (सुप्रा) में, स्पष्ट रूप से कहा गया है कि एक बार

विशेष अनुमति याचिका को वापस लिए जाने के रूप में खारिज कर दिया जाता है, यदि बाद में विशेष अनुमति याचिका के माध्यम से सर्वोच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाने की कोई स्पष्ट स्वतंत्रता नहीं दी गई है, तो इसकी अनुमति नहीं दी जा सकती है। तैयार संदर्भ के लिए, उक्त निर्णय के प्रासंगिक उद्धरण को नीचे रखा जा रहा है:

डी.

“विनोद कपूर बनाम गोवा राज्य के मामले में इस न्यायालय ने स्पष्ट रूप से कहा है कि एक बार विशेष अनुमति याचिका को उच्च न्यायालय के समक्ष समीक्षा याचिका के उपाय को समाप्त करने के बाद एक बार फिर विशेष अनुमति याचिका दायर करने के लिए उचित अनुमति प्राप्त किए बिना वापस ले लिया जाता है, तो यह विचारणीय नहीं है।”

ई.

34. इसके विपरीत, एल. डी. अपीलार्थियों की ओर से पेश वकील ने खोडे डिस्टिलरीज लिमिटेड के मामले पर भरोसा किया है। बनाम श्री

एफ.

महादेश्वर सहकार सकारे कारखाने लिमिटेड **3.**, जिसमें वह

यह देखा गया है कि विलय का सिद्धांत उन मामलों में लागू नहीं होता है जहां विशेष अनुमति याचिका की बर्खास्तगी एक गैर-भाषी आदेश के माध्यम से होती है। सुविधा के लिए उक्त निर्णय के प्रासंगिक अनुच्छेदों को यहाँ पुनः प्रस्तुत किया जा रहा है:

जी.

“हम इन मामलों के लिए प्रासंगिक निष्कर्षों को निम्नानुसार दोहराते हैं:

(कुन्हयमद मामला। कुन्हयमद बनाम केरल राज्य, (2000) 6 एस. सी. सी. 359] एस. सी. सी. पी. 384)

3 (2019) 4 एससीसी 376

एच.

1018 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 10 एस. सी. आर.

“((iv) अपील करने के लिए विशेष अनुमति से इनकार करने वाला आदेश गैर-बोलने वाला आदेश या बोलने वाला आदेश हो सकता है। किसी भी मामले में यह विलय के सिद्धांत को आकर्षित नहीं करता है। अपील के लिए विशेष अनुमति से इनकार करने वाला आदेश चुनौती के तहत आदेश के स्थान पर प्रतिस्थापित नहीं होता है। इसका मतलब यह है कि न्यायालय अपने

विवेकाधिकार का प्रयोग करने के लिए इच्छुक नहीं था ताकि अपील दायर करने की अनुमति दी जा सके।

बी.

(v) यदि अपील करने की अनुमति से इनकार करने का आदेश एक बोलने वाला आदेश है यानी छुट्टी देने से इनकार करने के कारण देता है, तो आदेश के दो निहितार्थ हैं। सबसे पहले, आदेश में निहित कानून का बयान संविधान के अनुच्छेद 141 के अर्थ के भीतर सर्वोच्च न्यायालय द्वारा कानून की घोषणा है। दूसरा, कानून की घोषणा के अलावा, आदेश में जो कुछ भी कहा गया है, वह सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दर्ज किए गए निष्कर्ष हैं जो उसके पक्षों को और न्यायालय, न्यायाधिकरण या प्राधिकरण को न्यायिक अनुशासन के माध्यम से उसके बाद की किसी भी कार्यवाही में बाध्य करेगा, सर्वोच्च न्यायालय देश का सर्वोच्च न्यायालय है। लेकिन, यह कहने का अर्थ यह नहीं है कि न्यायालय, न्यायाधिकरण या प्राधिकरण का आदेश विशेष अनुमति याचिका को खारिज करने वाले सर्वोच्च न्यायालय के आदेश में विलय हो गया है या सर्वोच्च न्यायालय का आदेश ही एकमात्र आदेश है जो पक्षों के बीच बाद की कार्यवाही में न्यायिक आधार पर बाध्यकारी है।

सी.

डी.

ई.

(vi) एक बार अपील करने की अनुमति दे दी गई है और सर्वोच्च न्यायालय की अपीलीय अधिकारिता को लागू किया गया है, अपील में पारित आदेश विलय के सिद्धांत को आकर्षित करेगा; आदेश उलट, संशोधन या केवल पुष्टि का हो सकता है।

एफ.

(vii) किसी अपील को प्राथमिकता दिए जाने या अपील करने की अनुमति मांगने वाली याचिका को उच्चतम न्यायालय के समक्ष अपील में परिवर्तित किए जाने पर, उसके बाद पुनर्विचार याचिका पर विचार करने का उच्च न्यायालय का अधिकार क्षेत्र समाप्त हो जाता है जैसा कि आदेश 47 नियम 1 सी. पी. सी. के उप-नियम (1) द्वारा प्रदान किया गया है।

जी.

35. जबकि अपीलार्थियों द्वारा दिए गए दो निर्णयों द्वारा निर्धारित कानून और उक्त दो निर्णयों के अनुरूप अन्य निर्णयों में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि पहली विशेष अनुमति ए को वापस लेने के बाद बाद में विशेष अनुमति याचिका दायर करने के लिए विशिष्ट स्वतंत्रता की आवश्यकता है।

एच.

एस. नरहरी और ओआरएस बनामएस. आर. कुमार और ओआरएस। [कृष्णा मुरारी, जे।] ए.

हालाँकि, खोडे डिस्टिलरीज (सुप्रा) के फैसले को विस्तार से पढ़ने पर उक्त फैसलों की नींव में एक दरार दिखाई देती है।

36. खोडे डिस्टिलरीज (सुप्रा) के मामले में, सवाल यह है कि

इस न्यायालय के समक्ष उठाया गया मुद्दा वर्तमान मामले से अलग था, हालाँकि, हमारी राय में उक्त निर्णय का अंतर्निहित तर्क वर्तमान मामले में हमारे सामने उठाए गए मुद्दे पर असर डालता है। उक्त मामले में, इस न्यायालय की तीन न्यायाधीशों की पीठ को इस सवाल का जवाब देने का काम सौंपा गया था कि क्या उच्च न्यायालय में एक समीक्षा याचिका विचारणीय है, एक बार उसी मुद्दे को उठाने वाली विशेष अनुमति याचिका खारिज हो जाने के बाद। इस न्यायालय ने कुन्हयमद बनाम केरल राज्य 4 के मामले पर भरोसा करते हुए कहा कि विशेष अनुमति याचिका खारिज होने के बाद भी उच्च न्यायालय के समक्ष समीक्षा अभी भी विचारणीय है।

बी.

सी.

37. यद्यपि उक्त निर्णय का निष्कर्ष वर्तमान मामले के लिए प्रासंगिक नहीं है, तथापि, हमारी राय में, उक्त निष्कर्ष पर आने के पीछे के तर्क का वर्तमान मामले पर प्रभाव पड़ता है। यह न्यायालय, उपर्युक्त मामले में, यह अभिनिर्धारित करते हुए कि विशेष अनुमति याचिका को खारिज करने के बाद भी समीक्षा बनाए रखने योग्य है, ने कहा कि गैर-भाषी आदेश के माध्यम से विशेष अनुमति याचिका को खारिज करना विलय के सिद्धांत को आकर्षित नहीं करता है।

डी.

38. सरल शब्दों में, इसका अनिवार्य रूप से यह अर्थ होगा कि उन मामलों में भी जहां विशेष अनुमति याचिका को वापस लिया गया था, जहां मामले को खारिज करते समय न्यायालय द्वारा कोई कारण नहीं दिया गया था और जहां उक्त विशेष अनुमति याचिका में अनुमति नहीं दी गई थी, उक्त बर्खास्तगी को भारत के संविधान के अनुच्छेद 141 के दायरे में कानून निर्धारित करने के रूप में नहीं माना जाएगा।

ई.

एफ.

39. यदि गैर-बोलने वाले आदेश के माध्यम से विशेष अनुमति याचिका को खारिज करने को भारत के संविधान के अनुच्छेद 141 के तहत कानून नहीं माना जाता है, तो इसे भी न्यायिक आदेश के रूप में नहीं माना जा सकता है, और इसलिए, ऐसी प्रत्येक बर्खास्तगी में, उन मामलों में भी जहां बर्खास्तगी वापस लेने के रूप में है, एक नई विशेष अनुमति याचिका दायर करने का

उपाय अभी भी बना रहेगा। इसके अलावा, यदि उक्त तर्क पर, उच्च न्यायालय में समीक्षा दायर करने के लिए एक उपाय की अनुमति दी जाती है, तो वही तर्क मनमाने ढंग से बाद में विशेष अनुमति याचिका दायर करने को बाहर नहीं कर सकता है।

जी.

4 (2000) 6 एस. सी. सी. 359

एच.

1020

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 10 एस सी आर।

40. हम इस तथ्य से दर्दनाक रूप से अवगत हैं कि इस तरह की व्याख्या, यदि उच्च न्यायालय में समीक्षा दायर करने के विशिष्ट दायरे से परे विस्तार की अनुमति दी जाती है, तो यह मुकदमेबाजी के द्वार खोल देगा, और अनिवार्य रूप से इसका मतलब यह होगा कि विशेष अनुमति याचिका की प्रत्येक बर्खास्तगी के साथ इसकी घोषणा करने के कारण भी होने चाहिए।

41. इसलिए, उपर्युक्त टिप्पणियों के आलोक में, हमारी राय है कि इस तरह के मुद्दे को शांत करने के लिए, इस न्यायालय की एक बड़ी पीठ द्वारा इसका निर्णय और विचार-विमर्श किया जाना आवश्यक है। इसके अलावा, चूंकि इस तरह की प्रारंभिक आपत्ति पर निर्णय लेने के बाद ही वर्तमान मामले के गुण-दोष दर्ज किए जा सकते हैं, इसलिए इसे बड़ी पीठ द्वारा कानून के प्रश्न पर निर्णय लेने के बाद एक उपयुक्त पीठ के समक्ष रखा जाना है।

बी.

सी.

42. तदनुसार, मामले के दस्तावेजों को एक बड़ी पीठ के गठन के लिए भारत के माननीय मुख्य न्यायाधीश के समक्ष रखा जाए।

अंकित ज्ञान

मामला माननीय मुख्य न्यायाधीश के समक्ष रखा जाए

डी.

(सहायक: महेंद्र यादव, एलसीआरए)

एक बड़ी पीठ के गठन के लिए।

ई.

एफ.

जी.

एच.